KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 4

विचारक, विश्वास और इमारतें
सांस्कृतिक विकास (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 4

प्रीतेश जोशी

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



स्तूप कैसे बनाए गए

- स्तूपों की वेदिकाओं और स्तंभों पर मिले अभिलेखों से इन्हें बनाने और सजाने के लिए दिए गए दान का पता चलता है।
- कुछ दान राजाओं के द्वारा दिए गए थे (जैसे सातवाहन वंश के राजा),
- कुछ दान शिल्पकारों और व्यापारियों की श्रेणियों द्वारा दिए गए।

जैसे – साँची के एक तोरणद्वार का हिस्सा हाथी दाँत का काम करने वाले शिल्पकारों के दान से बनाया गया था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- सैकड़ों महिलाओं और पुरुषों ने दान के अभिलेखों में अपना नाम, कईयों ने अपने गाँव या शहर का नाम, कईयों ने अपना पेशा और रिश्तेदारों के नाम भी लिखवायें हैं।
- इन इमारतों को बनाने में भिक्खुओं और भिक्खुनियों ने भी दान दिया।

संघ एवं राजा शिल्पकार

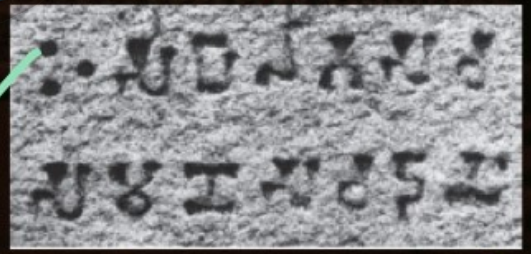

सांची का दानात्मक अभिलेख

ऐसे सैकड़ों अभिलेख भरहुत तथा अमरावती में भी मिले हैं।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

स्तूप की संरचना

- स्तूप (संस्कृत अर्थ टीला) का जन्म एक गोलार्द्ध लिए हुए मिटी के टीले से हुआ जिसे बाद में अंड कहा गया।
- धीरे-धीरे इसकी संरचना ज़्यादा जटिल हो गई क्योंकि इसमें कई चौकोर और गोल आकारों का संतुलन बनाया गया।

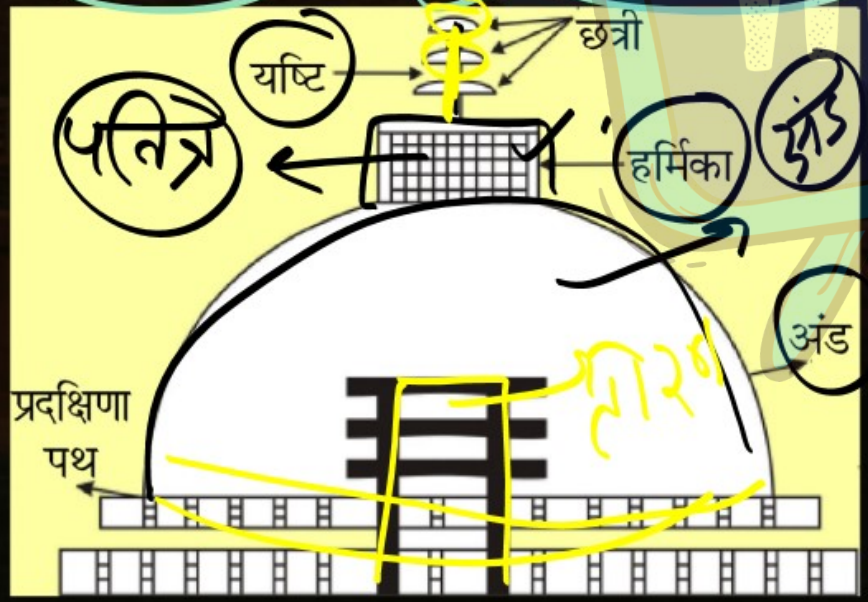

- अंड के ऊपर एक हर्मिका होती थी। यह छज्जे जैसा ढाँचा देवताओं के घर का प्रतीक था।
- हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे यष्टि कहते थे जिस पर अक्सर एक या अधिक छत्री लगी होती थी।
- टीले के चारों ओर एक वेदिका होती थी जो पवित्र स्थल को सामान्य दुनिया से अलग करती थी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

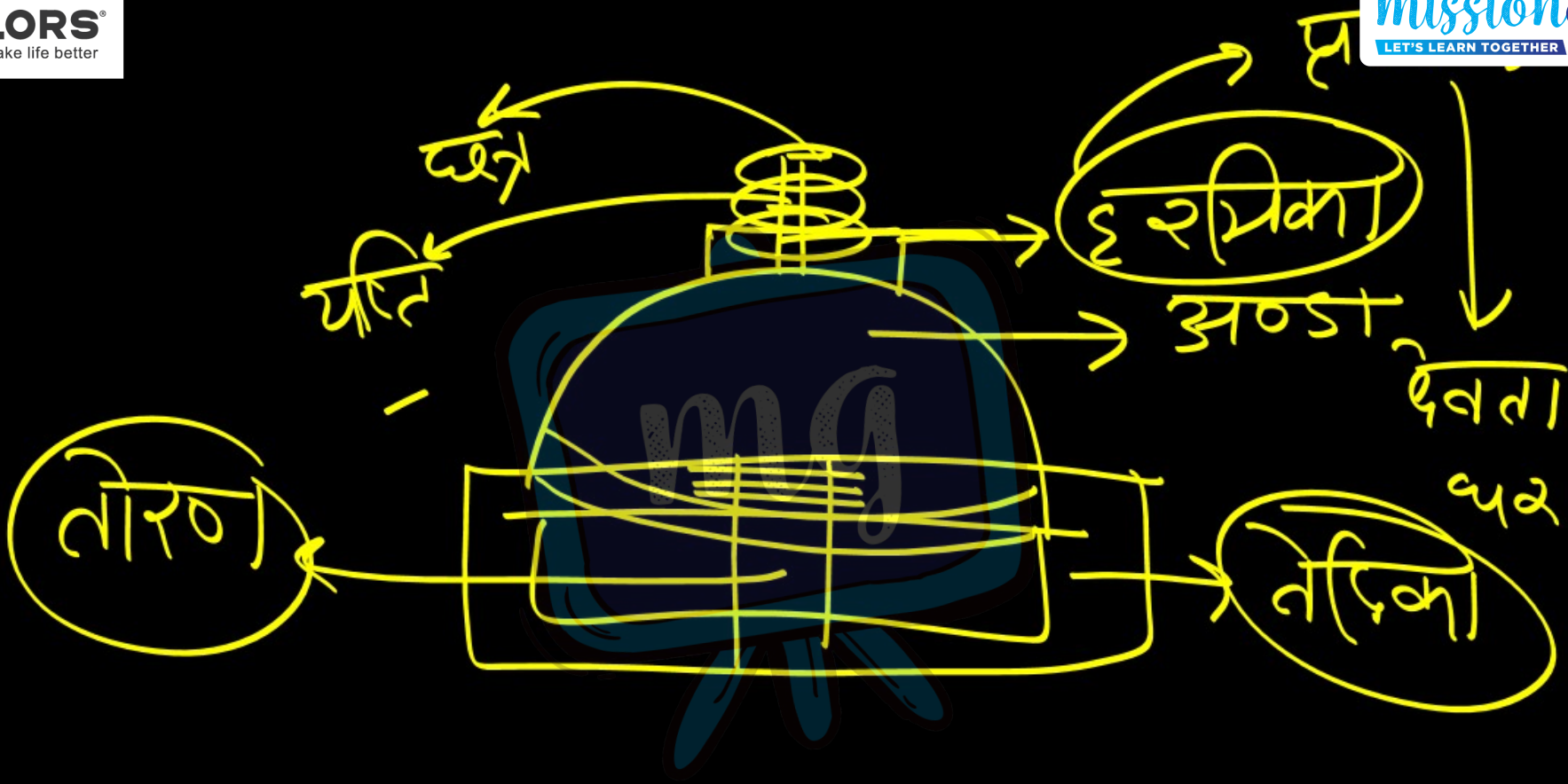

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

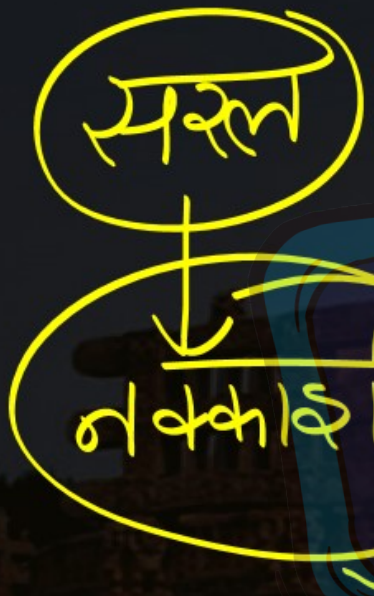

साँची और भरहुत के प्रारंभिक स्तूप :-

- ये स्तूप बिना अलंकरण के हैं सिवाए इसके कि इनके चारों ओर पत्थर की वेदिकाएं और तोरणद्वार है।
- ये पत्थर की वेदिकाएँ किसी बाँस के या काठ के घेरे के समान थीं।
- चारों दिशाओं में खड़े तोरणद्वार पर खूब नक्काशी की गई थी।
- उपासक पूर्वी तोरणद्वार से प्रवेश करके टीले को दाईं तरफ़ रखते हुए दक्षिणावर्त परिक्रमा करते थे, मानो वे आकाश में सूर्य के पथ का अनुकरण कर रहे हों।
- बाद में स्तूप के टीले पर भी अलंकरण और नक्काशी की जाने लगी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

स्तूपों की खोज

अमरावती और साँची की नियति :-

- हर स्तूप का अपना इतिहास है।
- कुछ इतिहास हमें बताते हैं कि वे कैसे बने।
- साथ-साथ इनकी खोज का भी इतिहास है।

खोज का इतिहास :-

अमरावती –

- 1796 में एक स्थानीय राजा को जो मंदिर बनाना चाहते थे, अचानक अमरावती के स्तूप के अवशेष मिल गए। उन्होंने उसके पत्थरों के इस्तेमाल करने का निश्चय किया। उन्हें ऐसा लगा कि इस छोटी सी पहाड़ी में संभवतः कोई खज़ाना छुपा हो।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इतिहास :-

अमरावती –

- 1796 में एक स्थानीय राजा को जो मंदिर बनाना चाहते थे, अचानक अमरावती के स्तूप के अवशेष मिल गए। उन्होंने उसके पत्थरों के इस्तेमाल करने का निश्चय किया। उन्हें ऐसा लगा कि इस छोटी सी पहाड़ी में संभवत: कोई खज़ाना छुपा हो।

रतजाना

- कुछ वर्षों के बाद कॉलिन मेकेंज़ी नामक एक अंग्रेज़ अधिकारी इस इलाके से गुज़रे। उन्हे वहां कई मूर्तियाँ मिलीं उन्होंने उनका चित्रांकन भी किया, लेकिन उनकी रिपोर्टें कभी छपी नहीं।
- 1854 में गुंटूर (आंध्र प्रदेश) के कमिश्नर ने अमरावती की यात्रा की। उन्होंने कई मूर्तियाँ और उत्कीर्ण पत्थर जमा किए और वे उन्हें मद्रास ले गए। (इन्हें उनके नाम पर एलियट संगमरमर के नाम से जाना जाता है)।
- उन्होंने पश्चिमी तोरणद्वार को भी खोज निकाला और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अमरावती का स्तूप बौद्धों का सबसे विशाल और शानदार स्तूप था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इतिहास

- 1850 के दशक में अमरावती के उत्कीर्ण पत्थर अलग-अलग जगहों पर ले जाए जा रहे थे।
  1. कुछ पत्थर कलकत्ता में एशियाटिक सोसायटी ऑफ़ बंगाल पहुँचे।
  2. कुछ मद्रास में इंडिया ऑफिस।
  3. कुछ पत्थर लंदन तक पहुँच गए।
  4. कई अंग्रेज़ अधिकारियों के बागों में अमरावती की मूर्तियाँ पाना कोई असामान्य बात नहीं थी।
- इस इलाके का हर नया अधिकारी यह कहकर कुछ मूर्तियाँ उठा ले जाता था कि उसके पहले के अधिकारियों ने भी ऐसा किया।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

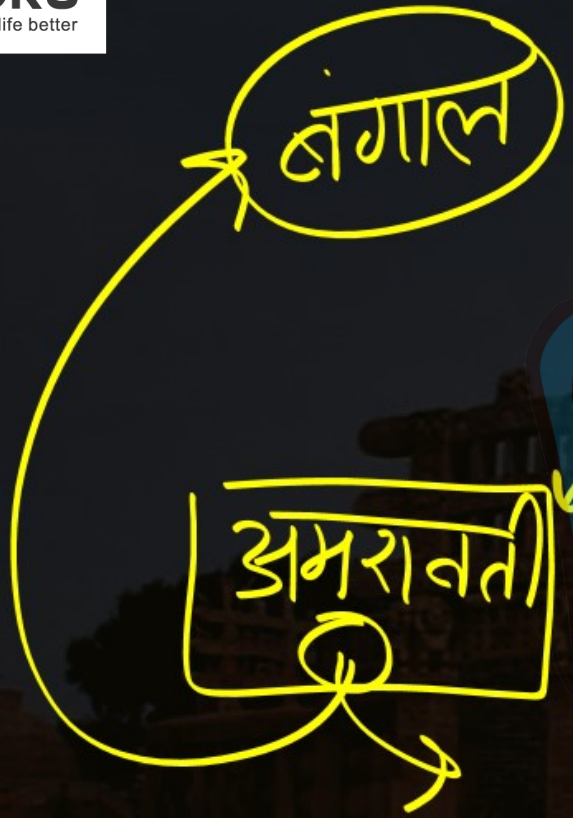

- पुरातत्ववेत्ता एच.एच. कोल अलग सोचते थे। उन्होंने लिखा "इस देश की प्राचीन कलाकृतियों की लूट होने देना मुझे आत्मघाती और असमर्थनीय नीति लगती है।"
- कौल मानते थे कि संग्रहालयों में मूर्तियों की प्लास्टर प्रतिकृतियाँ रखी जानी चाहिए जबकि असली कृतियाँ खोज की जगह पर ही रखी जानी चाहिए।
- दुर्भाग्य से कोल अधिकारियों को अमरावती पर इस बात के लिए राज़ी नहीं कर पाए। लेकिन सांची का खोज की जगह पर ही संरक्षण की बात को मान लिया गया।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

साँची :-

- साँची क्यों बच गया जबकि अमरावती नष्ट हो गया?
- शायद अमरावती की खोज थोड़ी पहले हो गई थी। तब तक विद्वान इस बात के महत्त्व को नहीं समझ पाए थे कि किसी पुरातात्विक अवशेष को उठाकर ले जाने की बजाय वहीं पर ही संरक्षित करना कितना महत्वपूर्ण था।
- 1818 में जब साँची की खोज हुई, इसके तीन तोरणद्वार तब भी खड़े थे। चौथा वहीं पर गिरा हुआ था।
- तब रीला भी अच्छी हालत में था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



सांची का पूर्वी तोरणद्वार
सजीव मूर्तियां

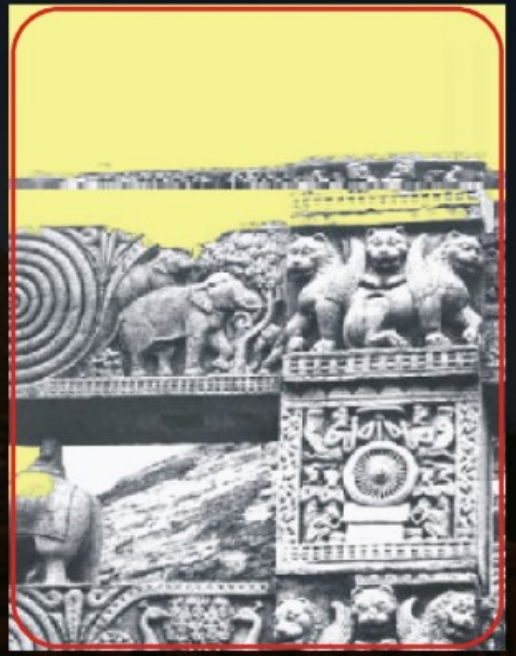

तोरण का एक हिस्सा

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- उस समय यह सुझाव आया कि तोरणद्वारों को पेरिस या लंदन भेज दिया जाए। अंततः कई कारणों से साँची का स्तूप वहीं बना रहा और आज भी बना हुआ है।
- जबकि अमरावती का महाचैत्य अब सिर्फ एक छोटा सा टीला है जिसका सारा गौरव नष्ट हो चुका है।

KOLORS®
make life better

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

स्तूप खोज ?

अमरावती

1796 → राजा

→ कॉलिन

चित्र → रिपोर्ट ✓

गूटं २ AI

↓

मूर्तियां।

↓

मद्रास

(संग्राहलय)

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

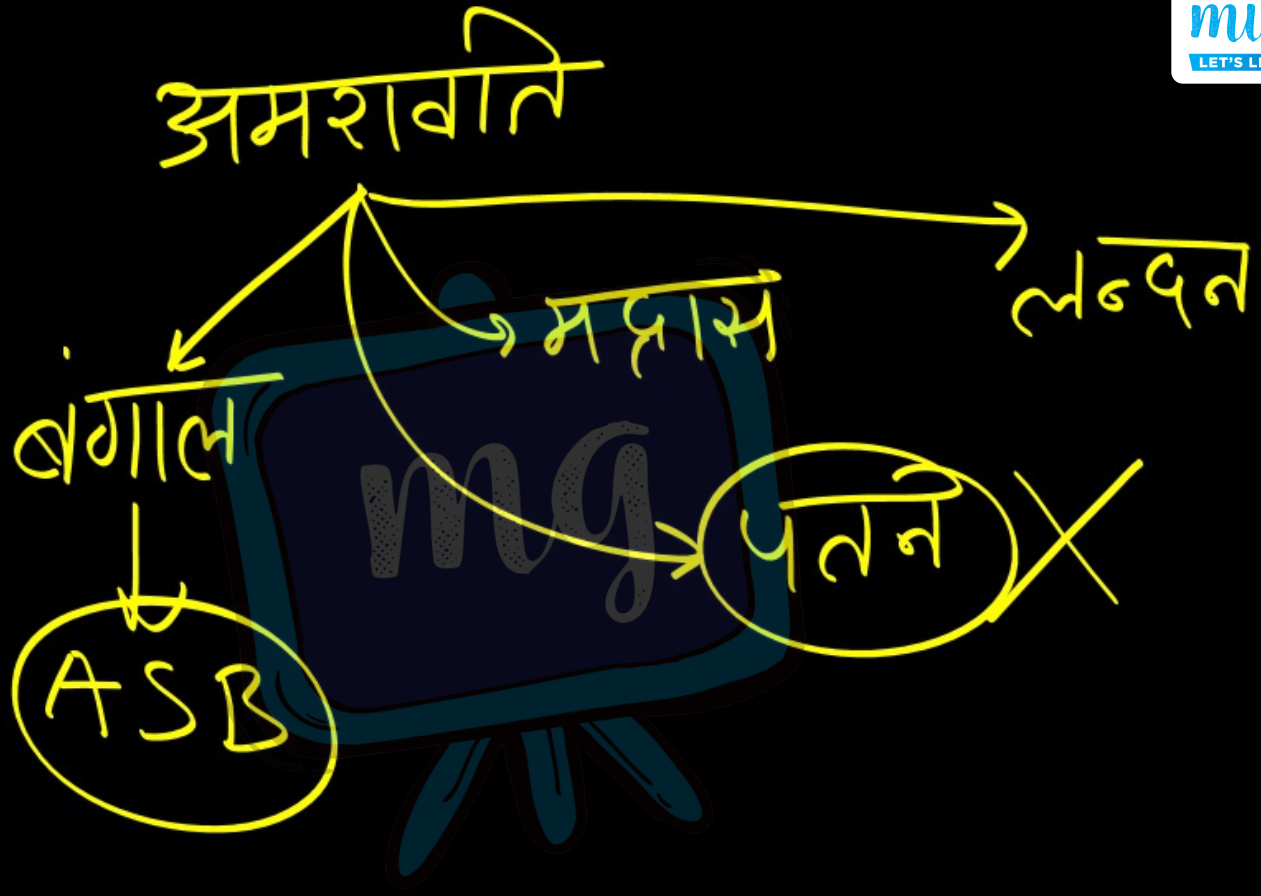

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

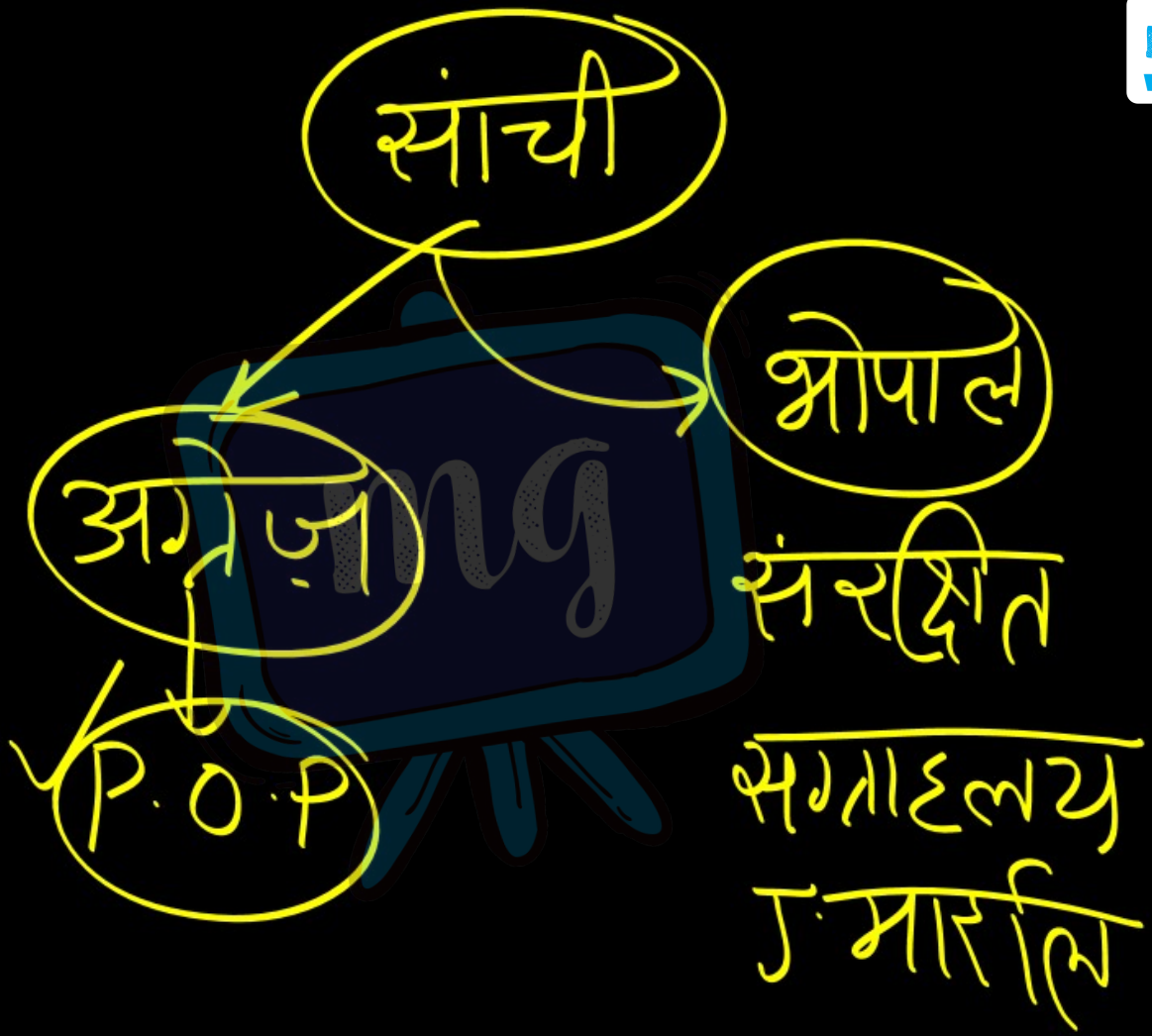

KOLORS®
make life better

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. "अमरातीते स्तूप तो नष्ट हो गया, पर सांची बचा रहा" ? चर्चा करें ?

1. अंग्रेज
2. पहले
3. जानकारी
4. भोपाल

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. स्तूप क्या है?

Q. स्तूप की संरचना पर एक लेख लिखे?

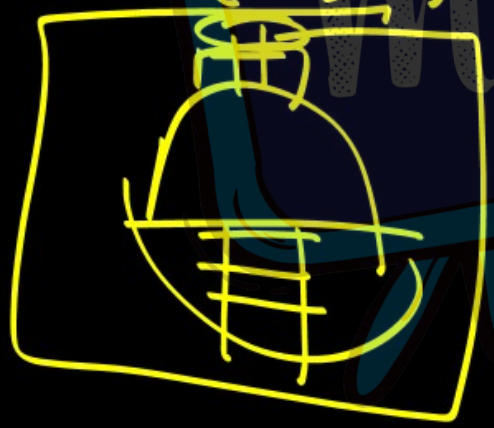

1. अण्डा
2. हरमिका
3. यष्टि
4. छत्र
5. प्रदक्षिणा पथ

⑥ तोरण द्वार

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. स्तूप का निर्माण किनके द्वारा किया जाता था?

(5) दानात्मक

1. राजा - अशोक
2. व्यापारी - श्रेणियां
3. सामान्य लोगो